



आर सी एफ शेती पत्रिका

इ-त्रैमासिक

कृषि समृद्धि की मार्गदर्शिका



अप्रैल-मई-जून 2026





निदेशक (विपणन) की राय.....

आज के समय में खेती में सिर्फ एक ही लक्ष्य में रखना काफी नहीं है, बल्कि उत्पादन बढ़ाने के साथ गुणवत्ता में सुधार लाना जरूरी है। इसके लिए उर्वरक और पानी का व्यवस्थापन, किट और बीमारी व्यवस्थापन से आगे बढ़कर पौधों की वृद्धि और विकास के लिए जरूरी कारकों के बारे में जानना और उनका सही इस्तेमाल करना जरूरी है। पौधे अपनी वृद्धि के लिए सेंद्रिय और रासायनिक उर्वरक का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन उनकी सही वृद्धि के लिए किसानों को आस-पास के माहौल, फूड चेन में बनने वाले हॉर्मोन्स, फोटोसिंथेसिस, प्रोटीन और परागन के बारे में भी जानना जरूरी है। खेती में किसानों को संतोषजनक उत्पादन नहीं मिलता है। इसका मुख्य कारण वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी है। इसलिए, अगर खेती में रोजी-रोटी का कोई दूसरा जरिया मौजूद नहीं है, तो खेती सस्ती नहीं हो सकती। सिर्फ एक फसल पर निर्भर रहने के बजाय, मौसम के हिसाब से फसलें लगाने से ज्यादा उत्पादन मिल सकता है। खेती में अच्छी गुणवत्ता के बीज और जमीन की सही जुताई जरूरी हैं। अच्छी गुणवत्तावाले खाद चुनना, उनका सही इस्तेमाल और फसल की सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी है।

जानवरों के चारे के लिए बिना कांटे वाली निवडुंग की खेती कि जा रही है, जिसमें कैल्शियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम जैसे मिनरल भरपूर मात्रा में होते हैं।

भारत में मसाला फसलों की शुरुआत हजारों साल पहले पुरानी भारतीय संस्कृतियों में हुई थी, जहाँ काली मिर्च, हल्दी, दालचीनी, लौंग, इलायची और करी पत्ते जैसे मसालों का इस्तेमाल खाना पकाने और दवा के लिए किया जाता था। मसाला फसलों की खेती किसानों के लिए एक फायदेमंद विकल्प है, इनकी अच्छी माँग है और ये पांपरिक फसलों, खासकर मिली-जुली खेती की तुलना में ज्यादा फायदे देती हैं। मसाला फसलों की खेती से मिले उत्पादन का मूल्य संवर्धन किया जाए तो विदेशों में व्यापार बढ़ाने के कई मौके हैं। महाराष्ट्र राज्य में खासकर तटीय इलाका, अपनी भौगोलिक स्थिति और मौसम की वजह से इन फसलों की खेती के लिए सही है। अगर केरल की तरह इस इलाके में भी मसाले की खेती को बढ़ावा दिया जाए, तो इससे किसानों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में जरूर मदद मिलेगी।

धन्यवाद।

निरंजन सोनक
निरंजन सोनक
निदेशक (विपणन)



विषय सूची

- ♦ बिना कांटे वाला कैक्टस चारों के लिए एक अच्छा विकल्प है..3
- ♦ आरसीएफ का बायोला (छच्छ. लिक्विड कंसोर्टियम)-
लिक्विड ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर.....6
- ♦ अजवैन की खेती.....7
- ♦ हल्दी फसल में बीमारी और कीट प्रबंधन.....10
- ♦ कोहला का उत्पादन बढ़ाने की तकनीक.....16
- ♦ करीपत्ते की खेती.....18



साथ बढ़ें समृद्धि की ओर

नवरत्न कंपनी

संपादक : श्री.नितीन भास्कर भामरे
Editor : Mr.Nitin Bhaskar Bhamare

संपादकीय समन्वय : श्रीकृष्ण वराडकर
Editorial Co-ordination – Srikrishna Varadkar
(022-25523022)

Email ID : crmrkf@gmail.com

सल्लागार समिती	Advisory Committee
भक्ति चिटणीस	Bhakti Chitnis
निकीता पाठारे	Nikita Pathare
सी.आर. प्रेमकुमार	C. R. Premakumar

यह निःशुल्क इ-त्रैमासिक किसानों के लिये आरसीएफ किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत तैयार किया गया है

शेती पत्रिका अब इस वेबसाइट पर उपलब्ध है।
www.rcfkd.com

बिना कांटे वाला कैक्टस चारों के लिए एक अच्छा विकल्प है

प्रो. संजय बड़े
दादासाहेब पाटील एग्रीकल्चरल कॉलेज दहेगांव,

बिना कांटे वाला कैक्टस चारे के लिए एक अच्छा ऑप्शन है। कैक्टस की कई किस्में होती हैं जो अलग-अलग तरह और आकार की होती हैं। उनमें से ज्यादातर में कांटे और मोटी स्किन होती है। लेकिन कुछ कैक्टस में कांटे नहीं होते, उन्हें बिना कांटे वाला कैक्टस कहा जाता है। इस पत्ते के दोनों तरफ टहनियां होती हैं, जिनसे नए पत्ते उगते हैं। कैक्टस के पत्तों में 80 प्रतिशत पानी होता है। कैक्टस खराब हालात, सूखे इलाकों, बहुत ज्यादा गर्मी और ठंड



के लिए बहुत रेजिस्टेंट होती है, यानी इसे कम बारिश या बंजर, बेकार ज़मीन में भी उगाया जा सकता है और जानवरों के लिए अच्छा चारा पैदा करता है। साथ ही, खेती के व्यवस्थापन में बहुत मनुष्यबल और रखरखाव का खर्च लगता है। कैक्टस की पत्तियों में कैल्शियम, फॉस्फोरस और मैग्नीशियम जैसे बहुत सारे खनिज होते हैं, जब कि रेशेदार पदार्थ 14 प्रतिशत है, विटामिन और कई तरह के खनिज ठीक-ठीक मात्रा में होते हैं, इसलिए बिना कांटे वाले कैक्टस को चारे के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

Follow : rcfkisanmanch on



facebook



twitter



instagram

1) ज़मीन और मौसम: यह चारे की फसल तेज़ गर्मी और सूखी सर्दियों के लिए सही है। क्योंकि यह बहुत खराब हालात में उगने वाली फसल है, इसलिए इसे बंजर या परती ज़मीन में भी उगाया जा सकता है। लेकिन ज़्यादा पैदावार के लिए, अच्छी पानी निकलने के जगह वाली पहाड़ी ढलान या दलदली ज़मीन चुननी चाहिए।

2) पौधारोपण का मौसम: कैक्टस को आम तौर पर अक्टूबर से मार्च तक मानसून का मौसम खत्म होने के बाद लगाना चाहिए क्योंकि इस मौसम में कैक्टस की ज़्यादातर पत्तियां झड़ने से बच जाती हैं।

3) बेहतर किस्में: कैक्टस की चारे की फसल की खेती के लिए बेहतर किस्में 1270, 1271, 1280, और 1308 चुननी चाहिए। ऊपर बताई गई किस्में चारा ब्रीडर, या महात्मा फुले एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, राहुरी जिला, अहिल्यानगर में चारे के लिए उपलब्ध होती हैं।

4) पौधारोपण का तरीका: हो सके तो कैक्टस चारे की फसल क्यारियों में लगानी चाहिए। ध्यान रहें कि पानी जमा न हो। पौधारोपण के लिए, लाइनों और पौधों के बीच 2X2 मीटर की दूरी पर 1 X 1 फुट का गड्ढा खो दें और उसे आधा फुट भरें। अगर आप ड्रिप इरिगेशन पर कैक्टस चारे की फसल लगाना चाहते हैं, तो इसे 1 X 0.60 मीटर की दूरी पर करें। आमतौर पर, पौधारोपण के लिए तैयार गड्ढों में मिट्टी के साथ एक किलो अच्छी तरह सड़ी हुई गाय की गोबर मिलाना चाहिए। पौधारोपण के समय, पत्तियों को इस तरह लगाना चाहिए कि पत्तियों का फैला हुआ हिस्सा पूरब और पश्चिम की ओर हो। साथ ही, पौधारोपण के समय ध्यान रहें कि इसका 1/3 हिस्सा मिट्टी में रहे और पत्तियों के पास की मिट्टी का अच्छी तरह दबा दें। आमतौर पर, कैक्टस की खेती के लिए प्रति हेक्टर 2000 पत्तियों की ज़रूरत होती है।

5) बीजारोपण प्रक्रिया: चारे की खेती के लिए, अच्छी क्वालिटी

की, पांच से छह महीने पुरानी, बिना काटे वाली, पकी हुई पत्तियां चुनें। पकी हुई पत्तियों को तने से तेज चाकू से काटना चाहिए। बीजारोपण के लिए मदर ट्री से काटी गई पत्तियों को दस से पंद्रह दिन तक छाया में सुखाना चाहिए क्योंकि ताज़ी पत्तियों में पानी की मात्रा 70 से 80% होती है और ऐसे में अगर पत्तियां लगाई जाती हैं तो उनके सड़ने की दर ज़्यादा होती है। बीजारोपण के लिए जी गई पत्तियों को मिट्टी के संपर्क में आने से बचाने के लिए, ताज़ी कटी पत्तियों को सूखने के लिए तिरपाल या चटाई पर रखना चाहिए। बीजारोपण के बाद, उसे सड़ने की बीमारियों से बचाने के लिए, क्योर की गई पत्तियों को बोर्डो मिक्सचर या मैकोज़ेब दो ग्राम प्रति लीटर पानी में डुबोना चाहिए। ट्राइकोडर्मा का घोल तैयार करते समय, 50 ग्राम ट्राइकोडर्मा को दस लीटर पानी में मिलाएं और सभी बीजारोपण के लिए चुनी गई पत्तियों को एक-एक करके उस घोल में डुबोएं।

6) पानी का व्यवस्थापन: कैक्टस की फसल में पानी रोकने की अच्छी क्षमता होती है। क्योंकि यह फसल कम पानी की आवश्यकता वाली फसल है, इसलिए रोपण के बाद हर दो से तीन दिन में पहले पानी बहुत कम मात्रा में देना चाहिए। फिर एक साल तक दस से बीस दिनों के अंतराल पर पानी देना चाहिए। पूरी तरह से स्थापित फसल को बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है। इसके लिए, पानी कम मात्रा में दिया जाना चाहिए, ताकि पौधे अच्छी तरह से बढ़े और अच्छी उपज दें।

7) उर्वरक प्रबंधन: इस फसल को बहुत कम रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता होती है। लेकिन पोषक तत्वों की कमी से पौधे की वृद्धि और उत्पादन पर असर पड़ता है। इसलिए, फसल रोपण के समय प्रति हेक्टर 60:30:30 किलोग्राम नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम देना चाहिए। सर्दियों में उर्वरकों का उपयोग करने से नई पत्तियों के विकास में मदद मिलती है। चारे के लिए पत्तियों की कटाई के बाद, हर बार प्रति हेक्टर 20 किलोग्राम नाइट्रोजन देना चाहिए।

8) कटाई प्रबंधन: अच्छे पौष्टिक चारे के लिए पूरी तरह से

विकसित पत्तियों की कटाई करनी चाहिए। ताकि उन पत्तियों में पानी की मात्रा कम हो जाए और चारे का पोषण मूल्य अच्छा रहें। एक साल बाद, जब हर पेड़ पर आठ से दस नई पत्तियां (औसत वज़न 12 से 15 kg) आ जाएं, तो उसे चारे के लिए काट लेना चाहिए। कैक्टस की एक से दो पत्तियां रख लें और बाकी पत्तियां काट लें। कटी हुई पत्तियों को जानवरों के बाड़े में ले जाएं, उन्हें तेज चाकू से बारीक काट लें और उन्हें सूखे चारे के साथ मिलाकरी बकरी या भेड़ के लिए पांच से छह या गाय और भैंस के लिए दस से बारह के अनुपात में चारे के रूप में दें।

9) उत्पादन: हमें प्रति हेक्टर 80 से 90 टन कैक्टस चारे का उत्पादन मिलता है। इस तरह, सूखे इलाकों में पशुपालन करने वाले किसान सूखे के दौरान अपनी ज़मीन में चारे की फसल के रूप में कांटेदार कैक्टस की खेती कर सकते हैं और अपने पशुओं का पालन-पोषण कर सकते हैं।

किसानों से अपील

किसानों से अपील है कि बिना किसी दबाव में विनाअनुदानित मूल्यवर्धित उर्वरक खरीदें और अपनी फसलों और खेती की ज़रूरतों के हिसाब से वैज्ञानिक तरीके से सही समय पर इस्तेमाल करें ताकि मिट्टी की उपजाऊ शक्ति बनी रहे और उत्पादन बढ़े।

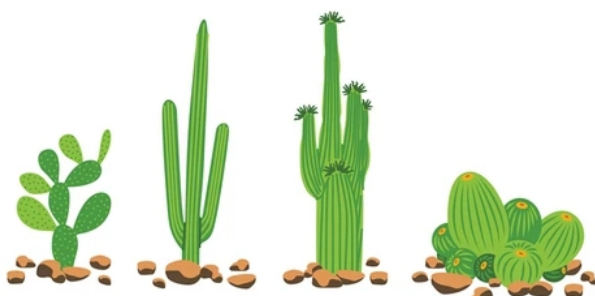
आरसीएफ मैनेजमेंट आपने उर्वरक विक्रेताओंको दबाव में या किसी भी तरह कि टैगिंग से विनाअनुदानित उर्वरक बेचने के लिए बढ़ावा नहीं देता है। किसानों को ये उर्वरक अपनी मज़ी से खरीदने चाहिए।

अगर ऐसा कोई दबाव या टैगिंग मिलती है, तो नीचे दिए गए टोल-फ्री क्रमांक पर संपर्क करें।

आरसीएफ

टोल-फ्री क्रमांक

1800223044



आरसीएफ का बायोला (NPK- लिक्विड कंसोर्टियम) - लिक्विड ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर

श्री.मिलिंद आंगने

(मार्केटिंग मैनेजर - रिटायर्ड) आरसीएफ लिमिटेड

एकात्मिक अन्नद्रव्य व्यवस्थापन में जैविक खाद का इस्तेमाल बहुत जरूरी है क्योंकि ये खाद उत्पादन कि लगत का खर्चा बचाते हैं और फसल की वृद्धि के लिए पोषक तत्व प्रदान करने में भी अहम भूमिका निभाते हैं। आरसीएफ के द्रवरूप जैविक खाद बायोला (NPK. लिक्विड कंसोर्टियम) का इस्तेमाल करने से, इसमें मौजूद नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटैशियम से जुड़े बैक्टीरिया मिट्टी के संपर्क में आते हैं और उनकी संख्या में तेजी होती है। जब ये जिवाणु सक्रिय होते हैं, तो वे जैविक आम्ल उत्सर्जित करते हैं, जिससे नाइट्रोजन का स्थिरीकरण हो जाता है, मिट्टी में जमा फॉस्फोरस उपलब्ध रूप में आ जाता है और पोटैशियम गतिमान हो जाता है और ये पोषकतत्व फसल को आसानी से मिल जाते हैं, जिससे फसल को आवश्यक अन्नद्रव्यों की जरूरत कुछ हद तक पूरी हो जाती है।

इस्तेमाल का तरीका - प्रत्यारोपण के समय 15 ml. बायोला (NPK. लिक्विड कंसोर्टियम) प्रति लीटर पानी में लें और पौधों की जड़ों को उसमें 30 मिनट तक डुबोकर रखें और पौधे का रोपण करें। छिड़काव करने या ज़मीन पर फैलाने के लिए - 200 ml बायोला (NPK. लिक्विड कंसोर्टियम) को 200 लीटर पानी में मिलाकर सुबह या शाम को प्रति एकड़ क्षेत्र में छिड़काव करना चाहिए या 500 ml प्रति टन गोबर या कम्पोस्ट मिलाकर खेत में फैलाना चाहिए।

गन्ने की पौध के लिए तरीका - 130 से 150 ml बायोला (NPK. लिक्विड कंसोर्टियम) को 40 लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ के लिए ज़रूरी गन्ने की पौध को 30 मिनट तक उसमें डुबोकर लगाना चाहिए।

फलदार पेड़ों के लिए - 10 से 15 ml बायोला (NPK. लिक्विड कंसोर्टियम) प्रति लीटर पानी में लेकर फलों के पेड़ों में पानी देना चाहिए।

बीज ट्रीटमेंट के लिए - 25 ml प्रति kg बीज बायोला (NPK. लिक्विड कंसोर्टियम) और अगर ज़रूरी हो, तो थोड़े से पानी से बीज प्रक्रिया के बाद, बीजों को छांव में पलटकर बो देना चाहिए। ठिबक सिंचन के लिए - एक एकड़ क्षेत्र लिए, 200 लीटर पानी में 1 लीटर बायोला (NPK. लिक्विड कंसोर्टियम) का इस्तेमाल करना चाहिए। यह एक जिवाणु खाद है, इसलिए इसे रासायनिक खाद, कीटनाशक पेस्टिसाइड या कवकनाशक के साथ नहीं मिलाना चाहिए।

बायोला (NPK. लिक्विड कंसोर्टियम) की खासियतें -

- जिवाणुद्वारा नाइट्रोजन स्थिरीकरण होता है इससे फसल को नाइट्रोजन मिलती है।
- अधुजनशील फॉस्फोरस घुलनशील रूप में आकार फसल को मिलता है।
- पोटैशियम की गतिमानता बढ़ती है।
- इस जिवाणु खाद के इस्तेमाल से बीजों की अंकुरण शक्ति बढ़ती है।
- यह जिवाणु खाद नैसर्गिक है, इसलिए इसका मिट्टी या फसलों पर कोई खराब असर नहीं होता है।
- नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटैशियम की मात्रा में बचत की जा सकती है।
- खेती के उत्पादन में 20% की बढ़ोतरी होती है।



अजवैन की खेती

प्रा. नीलश भागवत सदर, प्रो. कर्तिक खरके, प्रो. वैभव पाटिल
डिपार्टमेंट-एग्रीकल्चरल बॉटनी

● शुरुवात जानकारी

अजवैन की खेती मुख्य रूप से इराक, ईरान, भारत और अफगानिस्तान में की जाती है। यह मसाला फसल भारत में बड़े पैमाने पर उगाई जाती है। यह कम पानी, कम देखभाल और सूखे हालात में अच्छी पैदावार देती है। अजवैन 60 से 90 cm लंबा पौधा होता है। पत्तियां बंटी हुई और थोड़ी अलग होती हैं, पत्तियों और बीजों का इस्तेमाल मसालों में किया जाता है। भारत में, सबसे बड़ा क्षेत्र गुजरात और राजस्थान राज्यों में है। यह फसल कम या ज्यादा पैमाने पर पूरे देश में उगाई जाती है।

अजवैन का वैज्ञानिक नाम *Trachyspermum ammi* है। यह एपिएसी (गाजर) कुटुंब की एक बहुत ही जरूरी दवा और मसाला फसल है।

इस्तेमाल -

अजवैन का इस्तेमाल मसालों और आयुर्वेदिक दवाओं में काफी हद तक होता है। पाचन शक्ति बढ़ाने की वजह से, ओवा खाने से गैस और बदहजमी नहीं होती। अजवैन एक पारंपरिक औषधीय पौधा है और इसके बीजों में 2 से 4.4% भूरा तेल होता है। अजवैन में मुख्य चीज थायोमोल है और इसका इस्तेमाल गैस्ट्रो और आंतों की समस्याओं को खत्म करने के लिए किया जाता है। अजवैन का तेल फंगीसाइडल और एंटीमाइक्रोबियल होता है, इसका इस्तेमाल टूथपेस्ट और परफ्यूम बनाने में किया जाता है। अजवाईन केबीजों का इस्तेमाल मसालों में कम मात्रा में किया जाता है।

मौसम: यह एक ठंडी फसल है और भारत में मुख्य रूप से रबी के मौसम में उगाई जाती है। इसे देश के कुछ हिस्सों में खरीफ की फसल के तौर पर भी उगाया जाता है। आसान शब्दों में कहें तो, ठंडा और सूखा मौसम पौधे की अच्छी ग्रोथ और फसल में

फूल आने के लिए अच्छा होता है। फसल में फूल आने के बाद, माहौल में ज्यादा नमी नुकसानदायक हो सकती है। लगातार नमी और बादलवाला मौसम कई कीड़ों और बीमारियों को बुलावा देता है। पौधे की वृद्धि के समय, 60 से 70% नमी और 14 से 27 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है। बीज भरने के समय मौसम गर्म होना चाहिए। इस फसल में सूखा सहने की क्षमता ठीक-ठाक होती है और यह कई तरह के मौसम के लिए सही है। इसलिए, इस फसल को खरीफ सीजन में देर से उगाया जा सकता है।

मिट्टी: मिट्टी का pH 6.5 से 7.5 होना चाहिए। अगर फसल बहुत भारी या हल्की मिट्टी में उगाई जाती है, तो पैदावार कम होगी। अच्छी पानी निकलने वाली रेतीली दोमट मिट्टी इस फसल के लिए सही है। यह फसल अच्छी पानी निकलने वाली मिट्टी के साथ-साथ ऑर्गेनिक चीजों से भरपूर दोमट मिट्टी में भी उगाई जा सकती है क्योंकि ऐसी मिट्टी में नमी बनाए रखने की क्षमता होती है।



बेहतर किस्में:

इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्स इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली और नेशनल स्पाइस सीड क्रॉप्स रिसर्च सेंटर, अजमेर, राजस्थान ने इस फसल की ये किस्में खेती के लिए जारी की हैं।

- 1) लैम सिलेक्शन:- यह किस्म आंध्र प्रदेश से चयन तरीके से बनाई गई है। पौधे की औसत ऊंचाई 60 बउ होती है। फसल का समय 135 से 145 दिन होता है और औसत पैदावार 8 से 9 क्विंटल प्रति हेक्टर होती है।
- 2) R-A.1.80:- यह किस्म बिहार में बनाई गई है और इसके बीज का साइज़ बहुत छोटा होता है और स्वाद बहुत अच्छा होता है। यह 170 से 180 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है और प्रति हेक्टर 10 से 11 क्विंटल पैदावार देती है।
- 3) AI.01.19 :- यह किस्म जूनागढ़ एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, जूनागढ़ (गुजरात) ने बनाई है और यह जल्दी पकने वाली (150 दिन) किस्म है और प्रति हेक्टर 10 से 12 क्विंटल पैदावार देती है। विदर्भ के मौसम में यह भुहरी बीमारी से भी कम नुकसान पहुंचाती है और इसके बीजों में 3 से 4 % तेल होता है।

किस्में:-

- A. राजस्थान: अजमेर अजवेन -1, अजमेर-2, अजमेर अजवेन -93, प्रताप अजवेन -1
- B. गुजरात: अजवेन -1, AI-01-19
- C. आंध्र प्रदेश: लैम सिलेक्शन-1, लैम सिलेक्शन-2, R. A-1-80, RA 1-9-80

ज़मीन की प्री-कल्टीवेशन: पिछली फसल की कटाई के बाद, सीधी और आड़ी जुताई करनी चाहिए। मिट्टी के ढेलों को तोड़ देना चाहिए, और हैरो को 3 से 4 बार घुमाकर मिट्टी को हवादार करना चाहिए। खरपतवार, झाड़-झंखाड़ और टूट हटा देना चाहिए। बीजों के अच्छे अंकुरण के लिए मिट्टी में नमी होना ज़रूरी है। सूखे की संभवनावाले इलाकों में, आखिरी जुताई के बाद, क्विनोलफॉस 1.5% या मिथाइल पैराथिलॉन 3% पाउडर 20 से 25 Kg/ha इस्तेमाल करना चाहिए।

बुवाई का समय: भारत में यह फसल ज़्यादातर रबी के मौसम में अक्टूबर से नवम्बर तक बोई जाती है। अच्छी पैदावार पाने के

लिए, बुवाई का समय ऐसा रखना चाहिए कि बीजों के बनने और पकने के समय मौसम सूखा और बारिश न हो।

बुवाई: बीज बोने का समय बुवाई के मौसम पर निर्भर करता है। रबी के मौसम के लिए 2.5 से 3.0 kg और खरीफ के मौसम के लिए 4 से 5 kh प्रति हेक्टर की ज़रूरत होती है। बुवाई के समय मिट्टी में नमी इतनी होनी चाहिए कि अंकुरण ठीक से हो सके।

बीज का इजाल: बुवाई से पहले एज़ोस्फिरिलम या एज़ोटोबैक्टर का इस्तेमाल करना चाहिए। बीज और मिट्टी से होने वाली बीमारियों के लिए, बाविस्टिन या थिरम या कैप्टन का 2 से 2.5 gm प्रति 1 kg इस्तेमाल करना चाहिए।

बुवाई का तरीका: बुवाई आमतौर पर बीजों को बिखेरकर की जाती है, लेकिन बीच की जुताई में आसानी के लिए, लाइनों में बुवाई करना सही रहता है। सिंचाई वाली जगहों पर, लाइनों के बीच 45 cm और सूखी बुवाई के लिए 30 cm की दूरी होनी चाहिए। दो पौधों के बीच 20 से 30 cm की दूरी होनी चाहिए। बीज लगभग 10 से 12 दिनों में उग जाते हैं। क्योंकि बीज आकार में छोटे होते हैं, इसलिए उन्हें मिट्टी में एक जैसा गिरने के लिए बोते समय रेत मिलाकर बोना चाहिए। बहुत ज़्यादा गहराई में, लगभग 1 से 1.5 cm, बोने से बचें। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बीज मिट्टी की सतह पर न गिरें।

न्यूट्रिएंट व्यवस्थापन: फसल की अच्छी वृद्धि के लिए, बोने से पहले 10 टन गोबर या कम्पोस्ट का इस्तेमाल करके खेत में बराबर फैला देना चाहिए। बोने के समय, 30 kg नाइट्रोजन, 40 kg फॉस्फरस और 30 kg पोटैशियम प्रति हेक्टर डालना चाहिए।

खरपतवार व्यवस्थापन- अजवैन फसल की शुरुआत में बहुत धीमी वृद्धि है। इसलिए, खेत को खरपतवार से मुक्त रखना चाहिए। अजवैन फसल की अच्छी वृद्धि के लिए, दो से तीन निराई और एक छिड़काव करना ज़रूरी है। पहली निराई बोने के 30 दिन बाद करनी चाहिए। एक जगह पर अजवैन के सिर्फ़ दो या तीन पौधे रखना चाहिए और बाकी को पतला करना ज़रूरी है। बुवाई से पहले, खरपतवार नियंत्रण के लिए प्रति हेक्टर

1 kg फेनेथिलीन का इस्तेमाल करना चाहिए। हर्बिसाइड की एफिशिएंसी बढ़ाने के लिए मिट्टी में काफी नमी होनी चाहिए।

सिंचाई मैनेजमेंट: मिट्टी के टाइप और माहौल को ध्यान में रखते हुए, अगर ज़रूरी हो, तो 15 से 25 दिन के अंतर पर पानी देना चाहिए, लगभग 4 से 5 सिंचाई की ज़रूरत होती है। अगर मिट्टी में नमी कम है, तो बुवाई के 4 से 5 दिन बाद हल्का पानी देना चाहिए, ध्यान रखना चाहिए कि बीज मिट्टी में सड़े नहीं और अंकुरण अच्छा होगा। शुष्क भूमि खेती पद्धति में, मिट्टी की नमी के हिसाब से पानी का व्यवस्थापन करना चाहिए। फूल आने कि अवस्था के दौरान यानी बोने के 70 से 85 दिन बाद, सुरक्षित सिंचाई से पैदावार बढ़ाने में मदद मिलती है।

फसल की सुरक्षा: इस फसल पर आमतौर पर कीड़ों और बीमारियों का असर नहीं होता है। पौधों की सुरक्षा के उपायों में प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव, संतुलित पोषण और हरी खाद शामिल हैं। महु(ephids) फिट पौधे के शाखा-विकास अवस्था में पाए जाते हैं। यह कीड़ा पौधे के नाजुक और रसीले हिस्सों जैसे पत्तियों, फूलों और नई टहनियों से रस चूसता है, जिससे पत्तियां पीली, सूखी हो जाती हैं और बीजों का साइज़ छोटा रह जाता है। अगर नुकसान क्षति स्तर से ज्यादा हो, तो 5% नीम एक्सट्रैक्ट या 2% नीम ऑयल स्प्रे करें या ज़रूरत हो तो इमिडाक्लोरप्रिड (0.005%) या थिमेथोक्सम (0.025%) या डाइमेथोएट (0.033%) छिड़काव करें।

बीमारियां:

1. डाउनी मिल्ड्यू: यह मिट्टी से होने वाली बीमारी है। इस बीमारी के लक्षण हैं 30 से 45 दिन पुराने पौधों में पत्तियों का पीला पड़ना और पौधे सूखकर मर जाना।

व्यवस्थापन: बीजों को कैप्टन या थिरम 2 से 2.5 gm/Kg बीज से इलाज करें। ट्राइकोडर्माविराइड 6 gm/Kg बीज या एज़ोस्परिलम या एज़ोटोबैक्टर का इस्तेमाल करने से इस बीमारी का असर 8.2% कम हो जाता है।

1. भूरे धब्बे वाली बीमारी: शुरु में, पत्ती के ऊपरी हिस्से पर एक सफेद कवक उगता है। समय के साथ, पूरा पौधा सफेद हो जाता है, पौधे कि वृद्धि रुक जाती है और पौधा सूख जाता है।

यह बीमारी तब होती है जब सापेक्षिक आर्द्रता 60% से ज्यादा हो और तापमान 15 से 25 डिग्री C हो।

मैनेजमेंट: सल्फर डस्टिंग 20 से 25 kg प्रति हेक्टर डालें।

कटाई: मौसम के हिसाब से, फसल 130 से 180 दिनों में पक जाती है। इस फसल में दो महीने में फूल आते हैं। कटाई आमतौर पर फरवरी से मई तक की जाती है। बीज के गुच्छों/फली को तोड़कर सुखा लेना चाहिए तथा बीजों को हाथ से रगड़ कर अलग कर लेना चाहिए अथवा पौधों को जमीन से 40 सेमी दूरी पर काट लेना चाहिए, उनके डंठलों को बांधकर सुखाने के लिए आकार दे देना चाहिए तथा खलिहान में ले जाकर लकड़ी से हल्के से कूटना चाहिए तथा बीजों को साफ करके भरना चाहिए। थ्रेसिंग में पांच से छह दिन लगते हैं, अजवैन के बीज आकार में छोटे होते हैं, अतः थ्रेसिंग के समय हवा से उड़ जाने के कारण नुकसान की संभावना रहती है, अतः थ्रेसिंग करने पर नुकसान कम होता है।

उत्पादन: यदि अजवैन की खेती वैज्ञानिक तरीके से की जाए तो शुष्क भूमि फसल प्रणाली में उपज 4 से 6 क्विंटल प्रति हेक्टर तथा आर्द्र भूमि प्रणाली में 12 से 15 क्विंटल प्रति हेक्टर होती है।



हल्दी फसल में बीमारी और कीट प्रबंधन

श्री.एस.बी.ब्रह्मणकर (एसोसिएट प्रोफेसर),
डॉ.एस.टी.इंगले (एसोसिएट प्रोफेसर),
प्लांट पैथोलॉजी डिपार्टमेंट, डॉ.पं.दे.के.वी., अकोला
डॉ.उल्हास पाटिल एग्रीकल्चरल कॉलेज जलगांव

मसाला वर्ग में हल्दी एक बड़ी नगदी फसल के तौर पर जानी जाती है। दुनिया के लगभग 80% उत्पादन भारत में होता है, लेकिन इसका सिर्फ 15 से 20 % ही निर्यात किया जाता है। उत्पादन की बात करें तो आंध्र प्रदेश पहले नंबर पर है, उसके बाद उड़ीसा, तामिलनाडु, असम, कर्नाटक और महाराष्ट्र है। महाराष्ट्र का जलवायु हल्दी की खेती के लिए बहुत अच्छा है, इसलिए महाराष्ट्र में हल्दी का क्षेत्र बढ़ाने की गुंजाइश है। इसके लिए ज़रूरी बातों पर लगातार ध्यान देना ज़रूरी है। हल्दी के दाम लगातार उतार-चढ़ाव, बेहतर किस्मों की खेती के लिए कम जगह, ऑर्गेनिक खाद की कमी, खेती की ज़्यादा लागत, नियंत्रित मार्केट की कमी, मशीन से कटाई, कीड़े और अलग-अलग बीमारियाँ और उनका सही नियंत्रण वगैरह को ध्यान में रखते हुए उत्पादन को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ाने की कोशिश करना बहुत ज़रूरी है। इसलिए, किसान दोस्तों, आइए कुछ ज़रूरी कीड़े और बीमारियाँ और उनके इलाज के बारे में जानकारी ले।

बीमारी पर नियंत्रण:

1) **कंद सड़न:** यह हल्दी और कंद वाली फसलों की एक बड़ी बीमारी है। अगर समय पर सावधानी न बरती जाए, तो यह बीमारी 50% तक नुकसान कर सकती है। ज़्यादा बारिश, भारी काली मिट्टी, खराब पानी निकलने वाली मिट्टी इस बीमारी के लिए अच्छी होती हैं। यह बीमारी अगस्त से सितंबर के समय में ज़्यादा देखी जाती है। सबसे पहले, पत्तियों के ऊपरी हिस्से ऊपर और किनारों से पीले पड़ जाते हैं और नीचे तक सूख जाते हैं। तने का ज़मीन के पासवाला हिस्सा काला और राख जैसा हो जाता है। अगर आप इस जगह की मिट्टी को देखें, तो गहवा भी ऊपर से काला और फीका दिखता है। अगर आप इस जगह पर दबाते हैं, तो उसमें से सड़ा हुआ, बदबूदार पानी निकलता है। ऐसे पेड़ का तना थोड़ा सा भी खींचने पर यह जल्दी ही आपके हाथ में आ जाएगा। यह बीमारी ज़्यादातर नेमाटोड या निराई-गुड़ाई, इंटरक्रॉपिंग से होती है, और अगर कंद को चोट लगती है, तो पाइथियम या फ्यूजेरियम जैसे फंगस गह्वे में चले जाते हैं और कंद सड़ने लगता है।



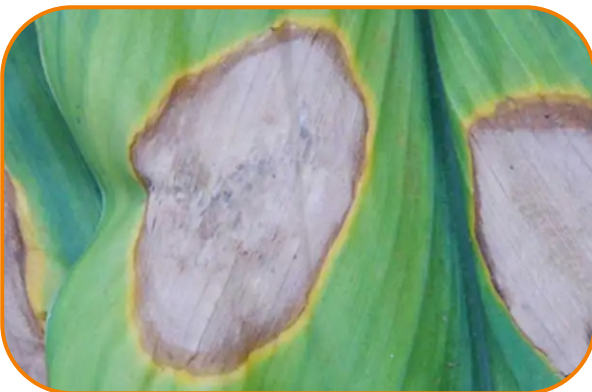
नियंत्रण:

- इस बीमारी को नियंत्रित करने के लिए, बोते समय स्वस्थ बीजों का इस्तेमाल करना चाहिए।
- मिट्टी हल्की से मीडियम लेकिन अच्छी ड्रेनेज वाली होनी

चाहिए।

- मानसून के दौरान, खेत की जुताई करनी चाहिए और पानी निकाल देना चाहिए।
- बीज ट्रीटमेंट: बोने से पहले, कंदों को फंगीसाइड से ट्रीट करना चाहिए। बीज प्रक्रिया कॉपर ऑक्सीक्लोराइड या मैन्कोजेब में से किसी एक फंगीसाइड से 2.5 ग्राम प्रति लीटर की दर से करना चाहिए।
- अगर खेत में यह बीमारी दिखे, तो इन फंगीसाइड्स को एक के बाद एक स्प्रे करना चाहिए। बोते समय ट्राइकोडर्मा प्लस 5 Kg प्रति हेक्टर गाय के गोबर में मिलाएं।
- बायोलॉजिकल नियंत्रण: ट्राइकोडर्मा (ट्राइकोडर्मा विरिडे) जैसे बायोलॉजिकल फंगीसाइड का इस्तेमाल करें। 2.2.5 Kg ट्राइकोडर्मा प्रति एकड़ गाय के गोबर में मिलाकर मिट्टी में डालें।
- रासायनिक नियंत्रण (ज़रूरत के हिसाब से): मेटलैक्सिल 8%, मैन्कोजेब 64% (टाटा मास्टर या मेटलग्रो) को 4 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर फसल के निचले हिस्से में डालें।

2) पत्तियों पर धब्बे: यह बीमारी टैफ्रिना मैकुलन्स फंगस की वजह से होती है। इस बीमारी में, पत्तियों पर अंडाकार भूरे रंग के धब्बे दिखते हैं। अगर आप उन्हें धूप में रखेंगे, तो उनमें कई गोले दिखेंगे। बीमारी वाली जगह पूरी तरह से लाल-भूरे रंग की हो जाती है। ऐसे धब्बे बढ़ते हैं और इकट्ठा हो जाते हैं और पूरी पत्ती छोटी हो जाती है। इस बीमारी का असर सितंबर से नवंबर तक देखा जाता है।



नियंत्रण:

- मौसम के हिसाब से सितंबर से नवंबर तक 15 से 20 दिन के गैप पर स्प्रे करना चाहिए। बीजों को 3 ग्राम मैन्कोजेब प्रति लीटर पानी या 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी में 30 मिनट के लिए भिगोएं।
 - 2.5 ग्राम मैन्कोजेब प्रति लीटर पानी या 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी में पखवाड़े के अंतराल पर 2 से 3 बार छिड़काव करना प्रभावी होता है।
 - प्रोजोल 255 ईसी (प्रोपिकोनाजोल) जैसे कवकनाशकों का छिड़काव करने से रोग को नियंत्रित किया जा सकता है।
- 3) लीफ स्पॉट (टिक्का):** यह एक कवक रोग है जो कोलेट्रोटीकम कैप्सिस नामक कवक के कारण होता है। आमतौर पर, अगस्त से अक्टूबर की अवधि के दौरान, आर्द्र मौसम में, यह रोग जमीन के पास पत्तियों पर शुरू होता है और ऊपरी पत्तियों तक फैल जाता है इसके लिए, लीफ ब्लॉच के लिए फंजीसाइड का स्प्रे करके बीमारी को नियंत्रित किया जा सकता है।



नियंत्रण:

- मौसम के हिसाब से सितंबर से नवंबर तक 15 से 20 दिन के गैप पर स्प्रे करना चाहिए।
- बीजों को 30 मिनट के लिए मैन्कोजेब 3 gm प्रति लीटर पानी या कार्बेन्डाजिम 1 gm प्रति लीटर पानी में भिगो दें।
- 2.5 gm प्रति लीटर पानी या कार्बेन्डाजिम 1 gm प्रति लीटर पानी या 1% बोर्डो मिक्सचर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड

(आगे का लेख पृष्ठ 14 पर)

पीएम प्रणाम योजना



✕ किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिला - नागपूर ✕



✕ किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिला - यवतमाळ ✕



✕ किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिला - अकोला ✕



✕ किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिला - अमरावती ✕



✕ किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिला - बुलाढाणा ✕



✕ किसान सभा, गाव - नागनवाडी, जिला - कोल्हापूर ✕

पीएम प्रणाम योजना



✕ किसान संगोष्ठी , गाव - न्हावी, जिला - पुणे ✕



✕ किसान संगोष्ठी , गाव - कळंब, जिला - यवतमाळ ✕



✕ किसान संगोष्ठी , गाव - सेवली, जिला - जालना ✕



✕ मृदा परीक्षण दिन , गाव - पैठण, जिला - छ. संभाजीनगर ✕



✕ मृदा परीक्षण दिन , गाव - पाली, जिला - बीड ✕



✕ मृदा परीक्षण दिन, गाव-हादगाव, जिला - नांदेड ✕

के साथ 3 gm प्रति लीटर पानी का 15 दिन के गैप पर 2 से 3 बार स्प्रे करना असरदार होता है या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% डाइफेनकरेनाज़ोल 11.4% SC जैसे फंगससाइड का इस्तेमाल फायदेमंद हो सकता है।

कीट नियंत्रण: 1) कपास का कीड़ा: इस फसल पर कपास के कीड़े का बहुत असर होता है। इस कीड़े की मक्खी मच्छर जैसी होती है लेकिन साइज़ में बड़ी और काले रंग की होती है और मक्खी के पैर शरीर से लंबे होते हैं। दोनों पंख पतले व पारदर्शी होते हैं तथा उन पर राख के रंग के धब्बे होते हैं। अंडे सफेद रंग के होते हैं। लार्वा पीले रंग के होते हैं तथा उनमें पैर नहीं होते। इस कीट के लार्व खुले छिद्रों में प्रवेश करते हैं तथा उन्हें खाते हैं।

नियंत्रण :

- जैसे ही खेत में कंद मक्खी दिखाई दे, मक्खियों को मारने के लिए क्लिनलफॉस 25% घोल 20 मिली प्रति 10 जीटर या डाइमेटोएट (30% घोल) 1 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर 1 से 2 छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करना चाहिए।
- आंशिक रूप से सड़े, सड़े बीजों को बोने के लिए उपयोग नहीं करना चाहिए तथा खेत में खुले छिद्रों को मिट्टी से ढक देना चाहिए।
- प्रति हेक्टर छह मिट्टी या प्लास्टिक के गमले लेने चाहिए। उनमें 200 ग्राम भीगे हुए अरंडी के बीज और 1.5 लीटर पानी डालकर खेत में रख दें। 8 से 10 दिन बाद कंद मक्खियां इस मिश्रण से आने वाली विशिष्ट गंध की ओर आकर्षित होकर इसमें गिरकर मर जाती हैं। चूंकि कंद मक्खियां कंदों को नुकसान पहुंचाने से पहले ही मर जाती हैं, इसलिए यह विशेष रूप से प्रभावी उपाय है।

4) पत्ती लपेटने वाली इल्ली: यह कीट हल्दी की फसल पर अगस्त के अंतिम सप्ताह से नवंबर के दूसरे सप्ताह तक दिखाई देता है। इस कीट का इल्ली हरे रंग की होती है और अंडे से निकलने के बाद यह पत्ती को अपने शरीर के चारों ओर लपेट लेती है और अंदर रहकर पत्तियों को खाती है।

नियंत्रण :

• जैसे ही कीट का संक्रमण दिखाई दे, मुड़ी हुई पत्तियों करके नष्ट कर देना चाहिए।

• कार्बोफ्यूरोन 3% सीजी 40 ग्राम प्रति 10 लीटर या डाइमेटोएट 30% ई.सी. 15 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

• मुड़ी हुई पत्तियां, लार्वा और प्यूपा को इका करके नष्ट कर देना चाहिए।

5) तना छेदक: तना छेदक कीट छोटा और नारंगी आकार का होता है, जिसके दोनों पंखों पर काले धब्बे होते हैं। लार्वा हल्दी के तने और कंद को खाता है। यह तने में छेद करके अंदर जाता है। यह अंदर का हिस्सा खाता है। पत्तियों पर एक लाइन में छेद दिखते हैं।

नियंत्रण :

- संक्रमित पौधों को खत्म कर देना चाहिए।
- नीम 5 ml प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। ज़रूरत हो तो 15 दिन बाद फिर से छिड़काव करें।
- लाइट ट्रैप का इस्तेमाल एक एकड़ के हिसाब से करें। ट्रैप को शाम 7 से 10 बजे तक चालू रखना चाहिए। इससे इस कीड़े के प्रौढ़ किट आकर्षित होते हैं, उन्हें खत्म कर देना चाहिए।

6) ह्यूमैनी: इस कीड़े के लार्वा नुकसानदायक होते हैं और पहले कुछ दिनों तक ऑर्गेनिक चीज़ें खाते हैं। बाद में, जड़ों को कुतर देते हैं। ज्यादा इंफेक्शन वाली जगहों पर, कंद भी कुतर जाते हैं। जड़ों के कुतरने से हल्दी की फसल पीली पड़ जाती है। पौधे छोटे रह जाते हैं। अगर उन्हें उखाड़ा जाए, तो वे आसानी से उखड़ जाते हैं।

नियंत्रण :

- अगर हल्दी की खेती के बाद ह्यूमैनी का संक्रमण दिखे, तो क्लोरपाइरीफॉस 4 एस। सॉल्यूशन को प्रति लीटर पानी में इस तरह डालना चाहिए।
- अगर डालना मुमकिन न हो, तो मिट्टी में बताए गए पेस्टिसाइड की सही मात्रा का इस्तेमाल करना चाहिए।
- बायोलॉजिकल कंट्रोल के लिए, मेटारिज़िम एनासोप्ली, जो एक

आर सी एक



शेती पत्रिका

पैरासिटिक फंगस है, को गाय के गोबर में 5 kg प्रति हेक्टर की दर से मिलाकर इस्तेमाल करना चाहिए।



“बुद्धि का विकास
मानव के अस्तित्व का
अंतिम लक्ष्य होना
चाहिए।”



आरसीएफ

'भारत एन पी के 15:15:15

आरसीएफ का गुणवत्तापूर्ण उर्वरक

मृदा की प्राकृतिक गुणवत्ता में सुधार।

नत्र, स्पूरद एवं पालाश की स्थिर आपूर्ति।



सभी फसलों के लिए उपयुक्त है।

कोहला का उत्पादन बढ़ाने की तकनीक ..

प्रो. संजय बड़े

औशिविदया दादासाहेब पाटिल एग्रीकल्चरल कॉलेज
दहेगॉव ता. वैजापुर, जिला.छ.संभाजी नगर

कोहला एक बारहमासी बेल है जो कुकुरबिटेसी परिवार से संबंधित है और इसका वैज्ञानिक नाम बेनिनकासा हिस्पिडा है। यह पौधा जापान और इंडोनेशिया का मूल निवासी है और बाद में दूसरे इलाकों में फैल गया। भारत में पंजाब, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र राज्यों में कोहला की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। कोहला या हिंदी में पेठा भारत में खाया जाने वाला एक फल सब्जी है। इसे सफेद कद्दू भी कहा जाता है। यह ज्यादातर दूध वाले कद्दू की तरह हरे रंग का होता है। कोहला की बेल ज़मीन पर रेंगती है। यह फल आंवले की तरह गोल होता है।

भारत के आगरा में पेठा नाम की एक मिठाई कोहला से बनती है। यह मिठाई बर्फ के तुकड़े की तरह पारदर्शी होती है।

1) जलवायु और मिट्टी:

मध्यम से भारी उपजाऊ मिट्टी कोहला की खेती के लिए अच्छी होती है। इसे रेतीली मिट्टी में भी उगाया जा सकता है। यह फसल खेती की ज़मीन, रेत या नदी के किनारों पर भी उगाई जा सकती है। अच्छी पानी निकलने वाली मिट्टी अच्छी होती है। यह फसल गर्म और सूखे मौसम में अच्छी तरह उगती है।

2) खेती का मौसम:

कोहला एक ऐसी फसल है जो लंबे समय तक उगती है। फरवरी, मार्च-अप्रैल के गर्मियों के महीनों में लगाई जाती है। यह गर्म और सूखे मौसम में अच्छी तरह उगती है। कोहला गर्मियों में या मानसून में भी लगाया जा सकता है।

3) बीज की मात्रा:

प्रति हेक्टर 3 से 4 Kg बीज की ज़रूरत होती है।

4) उगाने लायक किस्में:

Ko-1 तमिलनाडु एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी की बनाई यह किस्म मीडियम टाइम की होती है और इसके फलों को वज़न 5 से 6 lह होता है। फलों में बीजों की संख्या कम होती है। एक बेल में 6 से 8 फल लगते हैं। फसल का समय 120 दिन होता है।

Ko-2: यह किस्म 120 दिन में तैयार हो जाती है और इसके एक फल का वज़न 3 सह तक होता है। फलों में गूदे का रंग हल्का हरा होता है। इसके अलावा, कोहलरिया **S-1** (पंजाब) और मुदलियार (तमिलनाडु) की किस्में उगाई जाती हैं।

5) अंतर:

कोहले के दो पंक्तियों के बीच की दूरी 1.5 से 2 मीटर और दो बेलों के बीच की दूरी 1 मीटर रखनी चाहिए। कोहले को गर्मियों में फरवरी-मार्च-अप्रैल के महीनों में लगाया जा ता है। जिन इलाकों में ज्यादा ठंड नहीं होती, वहां इसे अक्टूबर के महीने में भी लगाया जा सकता है।



6) बीज प्रक्रिया:

अच्छे अंकुरण के लिए, बीजों को 24 से 28 घंटे तक गीले धान में रखना चाहिए। बीज बोने से पहले, बीजों को कार्बेन्डाजिम कि प्रक्रिया करके लगाना चाहिए।

7) खाद व्यवस्थापन:

फसल में 25 टन गोबर डालना चाहिए। इसके अलावा, 100 इंच नाइट्रोजन, 50 इंच फास्फोरस और 50 इंच पोटेशियम की पूरी मात्रा बोने के समय देनी चाहिए और बची हुई नाइट्रोजन की मात्रा बोने के 30 दिन बाद और फूल आने के समय लगातार दो किस्तों में देनी चाहिए।

8) पानी व्यवस्थापन:

फसल को शुरू में अंकुरण तक दो बार पानी देना चाहिए। फिर, मिट्टी की नमी, मौसम और फसल की वृद्धि के हिसाब से पानी देना चाहिए। फूल आने से लेकर फल पूरी तरह बढ़ने तक नियमित रूप से पानी देना चाहिए।

9) इंटरक्रॉपिंग:

खेतों और बोए गए खेतों को खरपतवार से मुक्त रखना चाहिए। इसके लिए दो से तीन बार निराई - गुड़ाई करनी चाहिए। फूलों और फलों को पानी के संपर्क में नहीं आने देना चाहिए। बेलों को दो लाइनों के बीच खुली जगह में फैलाना चाहिए। फल लगने की दर बढ़ाने के लिए, हाथ से परागन करना चाहिए।

10) कटाई और प्रोडक्शन:

सब्जी के लिए, फलों को तब तोड़ना चाहिए जब वे छोटे हों। स्टोरेज के लिए, फलों को पकने पर तोड़ा जाता है। कोहला की पैदावार 15 से 20 टन प्रति हेक्टर होती है।

आरसीएफ शेती पत्रिका के संबंध में विवरण

1. प्रकाशन सीन: राष्ट्रीय केमिकल एंड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

‘प्रियदर्शिनी’ ईस्टर्न एक्सप्रेस हायवे, सायन, मुंबई- 400022

2. प्रकाशन आवृत्ति: त्रैमासिक, ई-प्रकाशन

3. प्रकाशन एवं संपादक: श्री.नितीन भास्कर भामरे

4. राष्ट्रीयता: भारतीय

5. पता - ‘प्रियदर्शिनी’ ईस्टर्न एक्सप्रेस हायवे, सायन, मुंबई - 400022

6. आरसीएफ शेती पत्रिका का पूर्ण स्वामित्व - राष्ट्रीय केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, ‘प्रियदर्शिनी’, ईस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, सायन, मुंबई - 40022

किसान कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत, यह पत्रिका किसानों के लिए पहले पखवाड़े में, तीन महीने में एक बार निःशुल्क ई-प्रकाशित की जाती है। मैं एतद्द्वारा घोषणा करता/करती हूँ कि ऊपर दी गई जानकारी सत्य और सही है।

श्री.नितीन भास्कर भामरे
प्रकाशन एवं संपादक
आरसीएफ शेती पत्रिका



करीपत्ते की खेती

डॉ. स्वाति लोनाग्रे
आनंद निकेतन एग्रीकल्चर कॉलेज,
आनंदवन वरोरा,

करीपत्ते घर के आंगन में एक अनदेखा पौधा है। लेकिन इसका वजूद हर घर में है। जैसे हल्दी के साथ केसर, अदरक के साथ लहसुन, धनिया के साथ करीपत्ता एक समीकरण बन गया है। स्वाद के साथ-साथ पत्ता भूख भी बढ़ाता।

करीपत्ते का नाम मुरैना केएनिगी है। यह बहुत तीखा, बारहमासी पौधा है जो आठ से दस फीट तक बढ़ता है। इस पौधा को मीठा नीम भी कहा जाता है। इसके पत्ते तने के उलटे होते हैं। इनमें एक खास खशबू होती है। सर्दियों में ये अपने पत्ते गिरा देते हैं। यह पौधा हर तरह के मौसम में आसानी से ज़िंदा रह सकता है। अगर इस फसल को पेशेवर तरीके से उगाया जाए और वैज्ञानिक तरीके से व्यवस्थापन किया जाए, तो यह फसल फायदेमंद हो सकती है।



मिट्टी और जलवायु :

- हल्की रेतीली मिट्टी से लेकर लाल-काली उपजाऊ मिट्टी में उगाया जा सकता है।
- ऐसी मिट्टी में नहीं लगाना चाहिए जिसमें पानी अच्छी तरह से न निकलता है।
- पीट वाली, रेतीली मिट्टी में अच्छी तरह उगता है। गर्म मौसम के लिए सही है, लेकिन पानी अच्छी तरह से निकलना चाहिए।
- 26 से 37 डिग्री सेल्सियस के बीच के तापमान में सबसे अच्छा उगता है।

किस्मे: बड़े पत्ते और छोटे पत्ते वाले करीपत्ते सेन काम्पा DWD-7, DW-2 ज्यादा स्वादिष्ट किस्में हैं जिन्हें एग्रीकल्चर कॉलेज, धारवाड़ ने डेवलप किया है। बड़े पत्ते वाले करीपत्तों में खुशबू कम होती है। इनमें खुशबूदार तेल की मात्रा 4 से 5% होती है।

खेती: अच्छी पैदावार देने वाले पेड़ों के पूरी तरह पके फल जुलाई से अगस्त में तोड़कर, उनसे बीज अलग करके खेती के लिए इस्तेमाल करने चाहिए।

कटिंग से खेती: बीज काटने के लगभग तीन हफ़्ते बाद उग आते हैं। बीजों को रात भर पानी में भिगोकर उगने का समय कम किया जा सकता है। उगने के लिए लगभग 20°C तापमान की ज़रूरत होती है। एक बीज से दो तीन पौधे निकलते हैं।

सीडलिंग से खेती: बीजों को जड़ने के लिए क्यारियाँ बनानी चाहिए, जिनमें मिट्टी, खाद और रेत बराबर मात्रा में मिलानी चाहिए। दोबारा लगाने के लिए एक साल पुराने पौधों का इस्तेमाल करना चाहिए। पौधों को एक से दो फीट की ऊँचाई पर लगाया जा सकता है। अलग-अलग पौधे लगाने के लिए, 1.2 से 1.5 मीटर की दूरी पर 30X 30 बउ के गड्ढे खोदें। गड्ढे को लगभग 20 से 25 दिन धूप में गरम करें और उसमें अच्छी तरह

सड़ी हुई गाय की गोबर की खाद, 1/2 kg SSP और मिट्टी का मिश्रण भर दें। अगर बारिश के मौसम की शुरुआत में लगाया जाए, तो पौधे अच्छी तरह से जड़ पकड़ते हैं, और प्राकृतिक माहौल अनुकूल होता है, इसलिए पौधे मरते नहीं हैं।

ज़िग-ज़ैग और इंटेसिव प्लांटिंग: इसे डबल ज़िग-ज़ैग पैटर्न में पाँच फीट की दूरी पर लगाया जा सकता है या इसे दो लाइनों में 1 मीटर और दो पौधों के बीच 30 cm की दूरी रखकर इंटेसिव तरीके से लगाया जा सकता है।

न्यूट्रिएंट मैनेजमेंट: ये बारहमासी पौधा है। पत्तियाँ बार-बार हटाई जाती हैं, इसलिए मिट्टी की जाँच के अनुसार खाद देनी होती है। पहले साल, हर पेड़ के लिए 10 से 20 Kg गोबर की खाद, 60 ग्राम नाइट्रोजन, 25 ग्राम फॉस्फोरस, 25 ग्राम पोटैशियम देना चाहिए। दूसरे साल से, हर पेड़ के लिए 70 ग्राम फॉस्फोरस और 25 ग्राम पोटैशियम देना चाहिए। हर छंटाई के बाद 50 ग्राम नाइट्रोजन देना चाहिए। भारी मिट्टी में, हर साल प्रति एकड़ 50 kg DAP से अच्छी पत्तियाँ मिलती हैं। खाद बारिश के मौसम की शुरुआत में देनी चाहिए। ज़रूरत के हिसाब करंजी और नीम पाउडर देना चाहिए।

पानी व्यवस्थापन: सर्दियों में, अगर मिट्टी भारी है, तो महिने में एक बार पानी देना चाहिए। अगर मिट्टी भारी है, तो 20 दिन बाद पानी देना चाहिए और अगर मिट्टी हल्की है, तो 15 दिन बाद पानी देना चाहिए।

इंटरक्रॉपिंग: अगर पौधे लगाए जाते हैं, तो कटाई के समय और उपलब्ध पानी का ध्यान रखने के बाद, सितंबर से खुली जगह में मेथी, धनिया, पालक, कुसुम, आम, चुकंदर वगैरह फसलें उगाई जा सकती हैं।

कीट और बीमारी का व्यवस्थापन: कीड़ों और बीमारियों का असर कम होता है क्योंकि यह फसल एक मज़बूत फसल है।

- पत्तियों पर फंगल स्पॉट, पम्पी खाने वाले कैटरपिलर, एफिड और स्केल कीड़े कुछ हद तक होते हैं।

- करी पत्ते खाने के लिए इस्तेमाल होते हैं, इसलिए पेस्टिसाइड के इस्तेमाल से बचना चाहिए और दशपर्णी या नीम के अर्क जैसे सेंद्रिय कीटनाशक के इस्तेमाल पर जोर देना चाहिए।

- चूसने वाले कीड़ों का नियंत्रण करने के लिए पीले चिपचिपे ट्रैप लगाने चाहिए। कटाई और प्रोडक्शन:

- उत्पादन बढ़ाने के लिए, जड़ों से निकलने वाली टहनियों को नियमित रूप से हटा देना चाहिए।

- करीपत्ते का पौधा साल में 2 से 3 फीट बढ़ता है। हर पौधे में 5 से 6 मज़बूत टहनियाँ होनी चाहिए। कटाई लगाने के 9 से 12 महीने बाद करनी चाहिए।

- अगर ज़्यादा मात्रा में लगाए हैं, तो तने को ज़मीन से 15 से 20 बउ ऊपर रखकर काटना चाहिए।

- साल में 3 से 4 बार कटाई की जा सकती है।

- बीज से उगाए गए करीपत्ते से पहले साल में 5 से 10 टन पैदावार होती है। अगले साल से, 5 से 8 साल तक, 15 से 20 टन मिल सकता है।

करीपत्ते के बारे में ज़रूरी बातें: यह फसल सूरज की तेज़ी और रोशनी के समय के हिसाब से कम या ज़्यादा होती है। अगर इसे बांध पर भी लगाया जाए, तो यह कमाई भी देता है और मुख्य फसलों को हवा से बचाता है।

दवा का इस्तेमाल:

- करीपत्ते खून में हीमोग्लोबिन बढ़ाने के लिए ज़रूरी हैं। इसका इस्तेमाल जानवरों के चारे के तौर भी किया जाता है।

- रोज़ाना खाना पकाने में स्वाद बढ़ाने के लिए।

- कैल्शियम, A,B और C विटामिन, प्रोटीन, आयरन, फॉस्फोरस और आयोडीन ज़्यादा होता है।

- पेट की बीमारियों से छुटकारा दिलाता है। पाचन को ठीक रखने में मदद करता है। पत्तियाँ पेट में ऐंठन, कब्ज और दस्त समस्याओं में फायदेमंद होती हैं।

- अगर पत्तियों का पेस्ट या पाउडर बनाया जाए, तो बालों की जड़ें मजबूत होती हैं। बाल हेल्दी और काले रहते हैं।
- इसे रोजाना चबाकर खाने से मोटापा कम होता है।
- अगर पत्तियों का पेस्ट, नींबू का रस और चीनी मिलाकर लगाया जाए, तो उल्टी कम होती है।
- लिवर और डायबिटीज में मरीजों के लिए फायदेमंद।
- आंखों की सेहत के लिए फायदेमंद।
- कोलेस्ट्रॉल लेवल कम करता है।
- रेगुलर सेवन और से कैंसर का खतरा कम हो सकता है।
- सूजन और स्किन की बीमारियों के लिए असरदार, मधुमक्खी और ततैया के काटने, खुजली में पत्तियां लगाने से आराम मिलता है।



हमारी शेती पत्रिका हमारी प्रतिक्रिया

- शेती पत्रिका पाने के लिए धन्यवाद, आज के ज़माने में यह अकेली शेती पत्रिका है जो बिना किसी स्वार्थ से हमारी सेवा करती है, यह निश्चित रूप से मेरे जैसे दूसरे किसानों के ज्ञान में इज़ाफ़ा करती रहेगी।
गोपाल सुरेश धोणे.
मु.पो. सरशिव, तालुका-मेहेकर, जिल्हा-बुलढाणा,
मो. 9923588997
- शेती पत्रिका के ज़रिए खेती-बाड़ी की जानकारी मिल जाती है। मैनेजमेंट को मेरा दिल से धन्यवाद।
आकाश संजय जयस्वाल
मु.पो.परतवाडा, तालुका-अचलपूर,
जिल्हा-अमरावती, मो. 9850659693
- RCF की शेती पत्रिका संगमनेर में हमारे पंचायत समिति कार्यालय में कृषि विभाग में आती है, इसमें खेती-बाड़ी की जानकारी और लिखावट बहुत काम की और महत्वपूर्ण होती है।
शरद चांगदेव विघवे
मु.पो. तळेगाव दिघे, तालुका - संगमनेर,
जिल्हा - अहिल्यानगर, मो. 9421902109



आर सी एक



शेती पन्निका

आरसीएफ का नया और गुणवत्तापूर्ण उर्वरक उत्पाद
हे खत पर्यावरण अनुकूल असून सर्व पिकांसाठी उपयुक्त है ।



RCF PROM

(फॉस्फेट समृद्ध जैविक उर्वरक)

- स्फुरद तत्व की फसल के लंबी अवधीतक उपलब्धी ।
- मृदा की प्राकृतिक गुणवत्ता में सुधार ।
- फसल की गुणवत्ता एवं उपज में वृद्धि ।

“समृद्ध किसान समृद्ध भारत”

RCF PROM

(फॉस्फेट समृद्ध जैविक उर्वरक)



आरसीएफ का नया और गुणवत्तापूर्ण उर्वरक उत्पाद



आर सी एक
नवरत्न कंपनी

राष्ट्रीय केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

प्रियदर्शिनी, इस्टर्न एक्सप्रेस हायवे, सायन, मुंबई - 400022 (महाराष्ट्र)

Website: www.rcfltd.com * Follow: rcfkisanmanch on



एक कदम स्वच्छता की ओर

पीएम प्रणाम योजना



ड्रोन द्वारा फवारणी प्रात्यक्षिक, जिला-निजामाबाद, तेलंगाना



किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिला-गांधीनगर, गुजरात



किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिला-जयपुर, राजस्थान



किसान सभा, जिला-छ.संभाजीनगर, महाराष्ट्र



किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिला-बमरावती, महाराष्ट्र



किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिला-नागरकुर्नुल, तेलंगाना

पीएम प्रणाम योजना



किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, ICAR - CRUIAF बेराकपुर, पश्चिम बंगाल



किसान सभा, जिला- गोदावरी(प.), आंध्रप्रदेश



किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिला - वलसाड, गुजरात



मायक्रोला खत प्रात्यक्षिक, बालेहल्ली, कर्नाटक



माती परीक्षण दिवस, जिला - रायगड, महाराष्ट्र



किसान सभा, जिला- रेवारी, हरियाणा



साथ बढ़ें समृद्धि की ओर

नवरत्न कंपनी

आरसीएफ किण्वित जैविक खाद (एफओएम)

किण्वित (फर्मेंटेड) जैविक खाद के लाभ:



- फसल के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की उपलब्धता
- उन्नत मिट्टी की संरचना एवं जलधारण क्षमता को बढ़ावा
- पौधों के जड़ों की वृद्धि और समग्र विकास
- पोषक तत्वों से भरपूर एवं पर्यावरण अनुकूल खाद
- सुयोग्य हार्मोनिक प्रक्रिया के कारण फलों और फूलों का संपूर्ण विकास
- मिट्टी में मौजूद उपयुक्त जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी

समृद्ध खेती से विकसित भारत!



राष्ट्रीय केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइज़र्स लि.

(भारत सरकार का उपक्रम)

“प्रियदर्शिनी”, इस्टर्न एक्सप्रेस हायवे, सायन, मुंबई - 400 022

Website: www.rcfild.com * Follow: [rcfkisanmanch](#) on [f](#) [i](#) [x](#)



एक कदम स्वच्छता की ओर